International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 04(I), October - December, 2023, pp. 135-142

शक्तिशाली भारत के निर्माण का संकल्पः इंदिरा गाँधी

प्रोफेसर डॉ. शकीला नकवी*

सार

भारत की सर्वशक्तिशाली प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी किसी परिचय की मोहताज नहीं है। वह भारतीय जनता के दिलों में निवास करती थी। उन्होंनें भारत को परमाणु संपन्न राष्ट्र बनाया। गुट निरपेक्ष आंदोलन को विश्व का सबसे बड़ा आंदोलन बना दिया। राकेश शर्मा को अंतरिक्ष में भेजकर भारत का प्रथम अंतरिक्ष यात्री बनाया। उनके समय भारत का प्रथम अंतरिक्ष उपग्रह आर्यभट्ट छोड़ा गया। इसरो उपग्रह ैस्ट.3 को श्री हरिकोटा से छोड़कर भारत नें अंतरिक्ष युग में प्रवेश कर लिया। उनके समय बछेन्द्रीपाल नें एवरेस्ट चोटी फतह की। उन्होंने महासागरीय विकास विभाग की स्थापना की तथा भारत को अन्टार्कटिका क्लब में शामिल किया। संयुक्त राष्ट्र महासभा को अनेक बार संबोधित किया। पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन पर चिन्ता जाहिर कर विश्व को चेताया। भारत में नवें एशियाई खेलों का आयोजन किया। श्वेत क्रांति एवं हरित क्रांति कर भारत को अन्न का निर्यातक देश बनाया। अदम्य साहस का परिचय देते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन को चेतावनी देकर पाकिस्तान के दो टुकड़े किए और बांग्लादेश का नवीन राष्ट्र का निर्माण किया। ऐसा करके उन्होनें न केवल विश्व का इतिहास बदल दिया बल्कि विश्व का भूगोल बदलने वाली प्रथम राजनेता बन गई।

शब्दकोशः *हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, संवैधानिक संशोधन, गुट निरपेक्ष आंदोलन, अंटाकर्टिका संधि, आत्मसमर्पण।*

प्रस्तावना

इंदिरा गाँधी भारत की तीसरी प्रधानमंत्री थी। केवल प्रधानमंत्री ही नहीं रही अपितु भारतीय जनता की निर्विवाद और सर्वमान्य नेता थी। उन्होंने शब्दों की अपेक्षा कार्यो पर बल दिया। वह दकियानूसी नहीं थी। उनका मन पूरे राष्ट्र के लिए खुला था। उन्होंने राष्ट्र की हर जरूरत को अपनी क्षमता से पूरा किया।

इंदिरा गाँधी ने जब सत्ता संभाली तो देश संकटों से गुजर रहा था। भारत पर चीनी आक्रमण के तीन वर्ष बाद पाक आक्रमण हुआ था। देश की आर्थिक हालत खराब थी। आद्यौगिक उत्पादन में गिरावट आ गई थी, निर्यात बंद हो गया था, जिससे विदेशी मुद्रा की आमद कम हो गई। खेती–बाड़ी की हालत बुरी थी, देश में अन्न का अभाव था। पूरे देश में सूखे की स्थिति थी। उन्होंने सभी समस्याओं का दृढ़ता व लगन से सामना किया।[1]

सारे विश्व के नेता इंदिरा गाँधी की शक्ति का लोहा मानते थे। उन्होंने विश्व पटल पर भारत की छवि एक स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर और शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में रखी। फिलिस्तीनी नेता यासिर अराफात उन्हें ैपेजमत) बहिन कहते थे तो अमेरिकी राजनयिक हेनरी किसिंजर नें इन्दिरा गाँधी की राजनयिक कुशलता की प्रशंसा की। उन्होंनें राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर अपने व्यक्तित्व, विचारों और कार्यो की अमिट छाप छोड़ी। विश्व का कोई देश उनकी उपेक्षा नहीं कर सकता था। एक प्रशंसक नें कहा है कि नेहरू को भारत रत्न माना जाता है तो उनकी पुत्री इंदिरा तो स्वयं ही भारत थी।[2]

---

* आचार्य, राजनीति विज्ञान, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टोंक, राजस्थान।

उद्देश्य

भारत की तृतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की नीतियों एवं कार्यो से विश्व का परिचय कराना तथा यह विश्लेषण करना कि उन्होनें भारत को एक वैश्विक शक्ति कैसे बनाया?

पंजाब का पुनर्गठन

आजादी के बाद से ही सिखों नें निरन्तर पंजाबी बोलने वालों के लिए अलग राज्य की माँग पुरजोर तरीके से उठाई थी। इंदिरा गाँधी नें 1966 में पंजाब तीन राज्यो पंजाब, हरियाणा व हिमाचल प्रदेश में पुनर्गठित किया।

आसाम का पुनर्गठन

देश में स्वतंत्रता के बाद से ही असम में शरणार्थियों की समस्या बढ़ती जा रही थी। बांग्लादेशी शरणार्थियों की बढती संख्या के कारण आसाम का पूरा ढाँचा ही प्रभावित हो रहा था। इंदिरा गाँधी नें विभिन्न समयों में आसाम का पुनर्गठन किया और इसे 7 राज्यों में विभाजित किया जो 7 सिस्टर कहलाते हैं।[3]

बैंकों का राष्ट्रीयकरण

इंदिरा गाँधी नें अध्यादेश द्वारा 19 जुलाई, 1969 को 50 करोड़ से अधिक पूँजी वाले 14 वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया।[4] 6 महीनें बाद देश में बैंकों की 1100 नई शाखाएँ खुलीं। यह एक जनकल्याणकारी कदम था। वह चाहती थी कि बैंकों का लाभ केवल समृद्ध लोगों तक ही सीमित न रहे बल्कि छोटे किसानों, घरेलू और कुटीर उद्योगों, छोटे उद्योगपतियों, कारीगरों, मजदूरों और शिक्षितों को भी मिले।

राष्ट्रपति का निर्वाचन एवं पार्टी का विभाजन

जाकिर हुसैन, वी.वी. गिरि और फखरूद्दीन अली अहमद तथा बाद में ज्ञानी जैल सिंह भी इंदिरा गाँधी की व्यक्तिगत पसंद के राष्ट्रपति थे। राष्ट्रपति वी.वी. गिरि के चुनाव में तो भारतीय इतिहास में पहली बार खुला संघर्ष देखने को मिला।[5] उस समय पार्टी संगठन सिंडिकेट बहुत मजबूत था। पार्टी संगठन के उम्मीदवार नीलम संजीव रेड्डी थे। पार्टी नें आधिकारिक उम्मीदवार को वोट देनें का व्हिप जारी किया। इंदिरा नें वी.वी. गिरि को अन्तरात्मा की आवाज पर वोट देनें का आह्वान किया। पार्टी उम्मीदवार को पूरी पार्टी का समर्थन नहीं मिला। इंदिरा गाँधी के उम्मीदवार वी.वी. गिरि भारत के चौथे राष्ट्रपति बने। इससे कांग्रेस में संकट बढ़ता गया। नवम्बर 1969 को कांग्रेस का विभाजन हो गया।

राजाओं के प्रिवीपर्सो और राजसी विशेषाधिकारों का उन्मूलन

इंदिरा सरकार नें राजाओं के प्रिवीपर्सो तथा विशेषाधिकार एवं राजा होनें की धारणा को समाप्त करनें के लिए संसद में विधेयक प्रस्तुत किया। संविधान में 24वां संशोधन करके कानून द्वारा यह लक्ष्य प्राप्त किया गया। इस फैसले की तीव्र प्रतिक्रिया हुई।

मध्यावधि चुनाव एवं इंदिरा कांग्रेस को ऐतिहासिक बहुमत

कांग्रेस विभाजन के फलस्वरूप इंदिरा गाँधी नें दल में अपना बहुमत खो दिया और मध्यावधि चुनाव हुए। उन्होनें देश का व्यापार दौरा कर 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया और भारी बहुमत से प्रधानमंत्री बनी।

परमाणु शक्ति सम्पन्न देश का निर्माण

उन्होंने 'स्माईलिंग बुद्ध' के अनौपचारिक छायां नाम से 1974 में राजस्थान के जैसलमेर में पोखरण में एक भूमिगत परमाणु परीक्षण किया।[6]

सिक्किम का भारत में विलय

चीन के विरोध करनें पर भी उन्होंने 1975 में सिक्किम का भारत में विलय किया। इससे उनकी छवि एक महान व्यक्तित्व के रूप में ढल गई जो गलती कर ही नही सकता था।[7]

दल पर नियंत्रण बढाना

उन्होंने कांग्रेस दल पर पूरी तरह नियंत्रण करनें की कोशिश की। कांग्रेस शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों को हटाकर अपनी पसंद के मुख्यमंत्री बिठाये। राजस्थान में मोहनलाल सुखाड़िया की जगह बरकतुल्लाह खान तो मध्य प्रदेश में श्यामा चरण शुक्ला के स्थान पर प्रकाश चन्द सेठी को मुख्यमंत्री बनाया। पार्टी फंड को अपने कब्जे में कर लिया।

देश को खाद्यान्न में आत्मनिर्भर एवं निर्यातक बनाना

कृषि सुधार हेतु उन्होनें हरित क्रांति और डेयरी विकास के लिए श्वेत क्रांति को बढावा दिया। उन्होनें खेती की वैज्ञानिक तकनीक, अच्छी खाद, उत्तम बीज, कृषि यंत्र, फसल की विभिन्न किस्में, सिंचाई की समुचित सुविधाएँ एवं फसल को विशेष तकनीक से उगाना आदि कार्य इतनी व्यापकता और बुद्धिमता से किए कि भारतीय कृषि में क्रांति आ गई। खाद का प्रयोग कई गुना बढ़ा। नलकूपों की संख्या में वृद्धि से पानी की सुविधा मिली। कृषि का सिंचाई क्षेत्र बढा और खाद्यान्न उत्पादन बढा।

आजादी के बाद आई इस हरित क्रांति से भारत विश्व के शक्शिाली देशों में गिना जानें लगा जो न केवल खाद्यान्न में आत्मनिर्भर हुआ वरन् दूसरे देशों में खाद्यान्न निर्यात कर भूख मिटानें में सक्षम हुआ।[8]

उन्होंने सिंचाई सुविधाओं, कृषि उत्पादन, ऋण सुविधाओं में वृद्धि, किसानों को अनाज की उचित कीमतें दिलाना, विपणन, भण्डारण, संसाधन और परिवहन सुविधाएँ उपलब्ध कराई।

उन्होंने श्वेत क्रांति के माध्यम से दुग्ध एवं डेयरी उत्पादनों का विकास किया। उन्होंने गौ आयोग का गठन किया।

शिक्षा, विज्ञान एवं तकनीक

उन्होंने विज्ञान एवं तकनीक के लिए कई इंस्टीट्यूट और सेटअप शुरू किए। पुरातन इंस्टीट्यूट को फंड उपलब्ध कराया। भारत नें इनसेट उपग्रह का प्रक्षेपण किया जिससे शिक्षा व तकनीक क्षेत्र में भारत की अच्छी बुनियाद पड़ी। इसरो का विश्व में रूतबा बढाया। उन्होंने दूरदर्शन शुरू किया। टेलीविजन को पूरे भारत के शहरों ही नहीं ग्रामीण इलाकों में भी पहुँचाया।

उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली की स्थापना की और विश्वविद्यालयी और तकनीकी शिक्षा के साथ ही जन–शिक्षा पर बल दिया।

समाज सुधार एवं विकास कार्य

उन्होंने समाज में घरेलू एवं कुटीर उद्योगों के विकास हेतु अनेक कार्य किए। लाखों महिलाओं को रोजगार के लिए सिलाई मशीनें वितरित की। 9 सैनिकों के लिए स्वतंत्रता सैनिक सम्मान पेंशन योजना चालू की।

निर्बल वर्ग को महत्व देना

उन्होंने देश के निर्बल व अल्पसंख्यक वर्ग तथा आम आदमी के लिए विशेष कार्य किए। उन्हें लाभ देनें के लिए सामाजिक व आर्थिक ढाँचा तैयार किया। उनका विशिष्ट लक्ष्य गरीबी दूर करना था। इसके लिए वह अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर एवं स्वउत्पादक बनाना चाहती थी और सार्वजनिक क्षेत्रों में अधिकाधिक धन लगाकर योजनाबद्ध विकास किया और विकास का लाभ गरीबों में बाँटा। उन्होनें गरीबी को देश की मूल समस्या बताया तथा इसे दूर करनें के लिए मूल नीति में कई बदलाव किए।

आपातकाल

1971 के लोकसभा चुनाव में इंदिरा गाँधी ने भारी बहुमत प्राप्त किया। इससे वह मंत्रिमण्डल, संसद, दल, राष्ट्र व अन्तराष्ट्रीय क्षेत्र में अत्यधिक शक्तिशाली होने लगी। अपने मंत्रिमण्डल में वह बादशाह थी।

उन्होंने संजय गाँधी को बिना सोचे–समझे प्रतिवर्ष 50,000 मारूति कारों के निर्माण का लाइसेंस दे दिया। इससे परिवारवाद का आरोप लगा। संजय की बढती सक्रियता से कांग्रेस के भीतर एक गुट बन गया जो प्रधानमंत्री कार्यालय के समानान्तर कार्य कर रहा था।

अनेक कारणों से सरकार से नाराज लोगों की संख्या बढती जा रही थी। संजय के मनमानें कामकाज उनका निशाना थे। गुजरात आंदोलन और बिहार आंदोलन बढा। जय प्रकाश नारायण सरकार विरोधी आंदोलन का नेतृत्व करनें लगे, तभी इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले में इंदिरा गाँधी के निर्वाचन को अवैध ठहराया तो विपक्षी दलों ने पूरे देश में सत्याग्रह, असहयोग आन्दोलन, घेराव, धरना तथा कानून भंग करनें वाले आंदोलन की घोषणा की।

भारत के राष्ट्रपति फखरूद्दीन अली अहमद ने राष्ट्रव्यापी आंदोलन, कानून तोड़ो, सत्याग्रह और आंतरिक गड़बड़ी की वजह से 26 जून 1975 को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 352 के अन्तर्गत राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा कर दी।[10] जयप्रकाश नारायण, मोरारजी और सैकड़ों नेताओं को, जमाखोरों, तस्करों, गुंडा तत्वों एवं आपराधिक प्रवृत्तियों के लोगों को गिरफ्तार कर लिया।

25 जून, 1975 से 21 मार्च 1977 तक 21 महीने की अवधि तक भारत में आपातकाल घोषित था। इस दौरान अनेक कठोर कदम उठाए गए ।[11] परिवार नियोजन के नाम पर नसबंदी करानें में अत्यधिक ज्यादतियाँ की गईं। अति महत्वकांक्षी प्रशासनिक अधिकारियों नें अपनी सीमाओं का उल्लंघन किया। अधिकारी स्थिति का फायदा उठाकर निरंकुश हो गए। आम आदमी उनकी निरंकुशता का शिकार होता रहा। ये बातें सरकार के विरोध में गई। सही और गलत की कोई परिभाषा नहीं रह गई। सरकार तानाशाह अधिकारियों पर नियंत्रण लगाने तथा उनको समझाने में विफल रही।

1 जुलाई, 1975 को इंदिरा गाँधी नें बीस सूत्रीय कार्यक्रम की घोषणा की। इसमें छोटे किसान, भूमिहीन मजदूर, शिल्पकार एवं झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले गरीब लोग, महिलाओं एवं कमजोर वर्गो की सहायता के लिए व्यावहारिक योजनाएँ और नीतियाँ लागू की।

आपातकालीन घोषणा के बाद आर्थिक अपराधों के विरूद्ध तेज अभियान करनें से कीमतों में गिरावट आई और मुद्रा स्फीति की दर तेजी से घटने लगी। हिंसा कम हुई कानून व्यवस्था की फिर से स्थापना हुई। जीवन व सम्पत्ति खतरों से सुरक्षित हुई। गुण्डागर्दी खत्म हुई। बसों व रेलों का संचालन समय पर होनें लगा। समय की पाबंदी हुई। सरकारी दफ्तरों में कार्य सुचारू रूप से होने लगा। सभी शक्तियॉ राष्ट्र के विकास में लगी। देश पटरी पर आया जिसे विनोबा भावे नें 'अनुशासन पर्व' की संज्ञा दी।[12]

आपातकाल में 5 फरवरी, 1976 को एक विधेयक पारित कर संसद का कार्यकाल एक वर्ष बढा दिया। आपातकाल में नवम्बर 1976 में 42वां संवैधानिक संशोधन लागू किया।

संविधान की प्रस्तावना में 'धर्मनिरपेक्षता' और 'समाजवाद' शब्दों को जोड़ा गया। विरोधियों की हठधर्मिता के बढते दबाव के कारण आपातकाल आया किन्तु बाद में यह राजसत्ता मजबूत करनें की वजह बन गया। इंदिरा की तानाशाही प्रवृत्तियाँ एवं अधिनायकवादी कार्यो से वह जनता की आस्था से दूर होती गईं।

18 जनवरी, 1977 को इंदिरा गाँधी ने लोकसभा भंग कर मार्च में लोकसभा आम चुनाव किए जिसमें कांग्रेस की हार हुई तथा जनता पार्टी बहुमत से सत्ता में आई।

धर्मनिरपेक्षता

इंदिरा गाँधी धर्म एवं वसुधैव कुटुम्बकम में विश्वास रखती थी। वह सभी धर्मो का आदर करती थी। उनके घर में चार धर्मो के लोग रहते थे। उन्होनें सबकी एक ही जाति और एक ही धर्म माना–मानवता। स्वर्ण मंदिर में देश की सुरक्षा के लिए सैनिक कार्यवाही करनें पर सिख उनके दुश्मन हो गए। खुफिया एजेंसी द्वारा सूचना देनें पर भी उन्होनें सिख अंगरक्षकों को हटाने से इंकार कर दिया। उन्हें धर्म के आधार पर भेदभाव स्वीकार नहीं था।

उनके लिए देश सबसे ऊपर था, धर्म नहीं। देश की एकता व अखण्डता के लिए उन्होनें अपने आपको समर्पित कर दिया था।

1980 के लोकसभा आम चुनाव में भारी बहुमत से प्रधानमंत्री बनी। पंजाब में स्वर्ण मंदिर आंतकवादियों की शरण स्थली बना तो उन्होनें सैनिक कार्यवाही की जिसके परिणामस्वरूप 31 अक्टुबर, 1984 को उनके सुरक्षाकर्मियों नें ही उनकी हत्या कर दी।

सावियत संघ के साथ 20 वर्षीय संधि

श्रीमति इंदिरा गाँधी नें अनेक बार सोवियत संघ की यात्राऐं की और 1971 में भारत सोवियत संघ के मध्य शांति, सहयोग और मित्रता की 20 वर्षीय संधि हुई। सोवियत संघ ने सदैव संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत का समर्थन किया तथा आर्थिक सहायता की है। दोनों देशों के मध्य आर्थिक, व्यापारिक, कूटनीतिक एवं अंतरिक्ष इत्यादि क्षेत्रों में अनेक समझौते हुए हैं।

बांग्लादेश की मुक्तिः ऐतिहासिक उपलब्धि

पाकिस्तान नें आजादी के बाद से ही पूर्वी बंगाल को काट कर रख दिया। वे सारे मोर्चे पर पिछड़ गए। वहाँ विकास कार्य नहीं किए। उन्हें वैध अधिकारों से भी वंचित रखा गया। 1970 में पूर्वी पाकिस्तान में शेख मुजीबुर्रहमान की शानदार जीत हुई। अब पूर्वी भाग के लोगों ने एकजुट होकर उचित हिस्सा दिलानें की मांग की तो पश्चिमी पाकिस्तान की पुलिस व सेना निर्दोष व निहत्थी जनता पर टूट पड़ी। 1971 तक 3 लाख लोग मारे गए। कई लाख लोगों को बेघर कर दिया। एक करोड़ लोग हमारे देश में धकेल दिए। पश्चिमी बंगाल, आसाम, त्रिपुरा एवं मेघालय में शरणार्थियों की समस्या उत्पन्न हो गई।

श्रीमति इन्दिरा गाँधी लगातार आक्रामक रूख अपनाती रही। उन्होंने लोकसभा में प्रस्ताव पारित कर हत्याएँ रोकनें की मांग की। संयुक्त राष्ट्र संघ से अत्याचारों को समाप्त करनें के लिए सहायता मांगी। भारत पाक सीमा पर युद्ध जैसी स्थिति बनती जा रही थी।

24 अक्टूबर 1971 को प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी नें यूरोप के छह देशो और अमरीका की तीन सप्ताह की यात्रा प्रारंभ की तथा भारतीय उप महाद्वीप के पूर्वी बंगाल की स्थिति से अवगत कराया। अनेक बार विशाल जनसभाओं को संबोधित किया। राष्ट्र के नाम अनेक बार प्रसारण किए।

पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। 4 दिसंबर 1971 को संसद के ऐतिहासिक सत्र में उन्होंने दोनों सदनों को संबोधित किया।

''आज सुबह पश्चिमी पाकिस्तान की सरकार ने हमारे विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी है। उनकी वायु सेना ने मनमाने ढंग से हमारी हवाई सीमाओं का उल्लंघन किया और कई हवाई अड्डो पर हमला किया।'' भारत अब बदल गया है। हम वही करेगे जो हमारे राष्ट्र हित में अच्छा होगा।

उन्होनें कहा कि भारत शांति चाहता है। यदि हम पर युद्ध थोपा जाता है तो हम लड़ने के लिए तैयार है। हम दुश्मन को कुचल देंगे।

भारत सरकार नें साहसपूर्ण निर्णय लेते हुए 6 दिसम्बर 1971 को लोकतांत्रिक बांग्लादेश को मान्यता दे दी। संयुक्त राष्ट्र संघ में अमेरिका ने युद्ध विराम तथा दोनों देशों की सेनाओं की वापसी के कई प्रस्ताव रखे किंतु सोवियत संघ के बार बार (वीटो) विषेधाधिकार का प्रयोग करनें से पाक असफल रहा।

अमेरिका नें भारत पाक युद्ध में सक्रिय होकर अपना सातवां जहाजी बेड़ा बंगाल की खाड़ी में भेजकर युद्ध का स्वरूप ही बदल दिया। सोवियत संघ नें खुलकर भारत का साथ दिया और अपने युद्धपोत हिन्द महासागर भेजे।

श्रीमति इंदिरा गांधी ने निर्भीकता व अदम्य साहस का परिचय देते हुए विश्व की किसी भी ताकत के आगे झुकने से मना कर दिया और शत्रु के विनाश के लिए साक्षात दुर्गा का रूप धारण कर लिया। अमरीकी

सातवें बेड़े की परवाह किए बिना बांग्लादेश को स्वतंत्र करानें का बीड़ा उठाया। बांग्लादेश में जनरल नियाजी के नेतृत्व में 90,000 पाकिस्तानी बलों ने आत्मसमर्पण कर दिया। ढाका स्वतंत्र देश बांग्लादेश की स्वतंत्र राजधानी बन गया। एक नये राष्ट्र के रूप में स्वतंत्र, स्वाधीन और सार्वभौम बांग्लादेश का उदय हुआ।[13]

शरणार्थी अपने घर लौट गए और शेख मुजीबुर्रहमान को पाक ने रिहा कर दिया।

गुट निरपेक्ष आंदोलन को विस्तृत करना

उन्होनें गुट निरपेक्ष आंदोलन का विस्तार कर इसे विश्व व्यापी बनाया 1961 बेलग्रेद सम्मेलन में इसके 25 सदस्य देश थे जो अब बढकर 100 से अधिक हो गए। यह विश्व का सबसे बड़ा शांति आंदोलन बन गया।

विदेश यात्राएँ

श्रीमति इन्दिरा गाँधी नें अनेक बार अमरीका की यात्रा की। उन्होंने रूस ब्रिटेन यूगोस्लाविया, मिस्र, तथा संयुक्त अरब अमीरात की यात्राएँ की फिर उन्होंने आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, सिंगापुर, मलेशिया, भूटान, चिली, ब्राजील, अर्जेंटीना और वेनेजुएला की महत्वपूर्ण यात्राएँ की तथा विश्व के सभी देशो ने अनेक महत्वपूर्ण संधि एवं समझौते किए तथा भारतीय हितों की रक्षा की।

संयुक्त राष्ट्र संघ को संबोधित करना

उन्होनें अनेक अवसरों पर संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित किया। 14 अक्टूबर 1968 में इन्दिरा गाँधी नें महासभा को संबोधित करते हुए विश्व की महान समस्याओं और उनके समाधान की तरफ संसार के प्रतिनिधियों का ध्यान आकृष्ट किया।[14] वह 10 सितंबर 1970 संयुक्त राष्ट्र संघ के रजत जयंती समारोह की मुख्य वक्ता थी।

मानव पर्यावरण सम्मेलन

उन्होनें 14 जून 1972 को संयुक्त राष्ट्र मानव पर्यावरण सम्मेलन को संबोधित किया। उन्होनें कहा कि वह ऐसा विश्व चाहती है जहाँ गरीबी, अज्ञानता, प्रदूषण, बीमारी जनसंख्या विस्फोट एवं परमाणु संकट आदि से सब मिलकर लड़ सके ।[15]''उन्होनें समस्त विश्व के लिए दो मुख्य चुनौतियाँ बताई व्यापक युद्ध का खतरा, परमाणु युद्ध, किटाणु युद्ध और अंतरिक्ष युद्ध भी जुड़ गया है।

राष्ट्रो के मध्य असमानता पर असंतोष

उन्होनें विश्व में समृद्ध व गरीब राष्ट्रों के मध्य असमानता दूर करनें पर बल दिया। नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था लागू करनें पर जोर दिया और समस्याओं से निपटने के लिए शांतिप्रिय देशों को साथ लेकर उपचारात्मक उपाय किए।

जलवायु परिवर्तन पर चिंता

उन्होनें 1972 में स्टॉकहोम में आयोजित मानवीय पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त की एक ऋचा सुनाई जिससे हमें पृथ्वी के साथ संबंध बनाए रखनें में मार्गदर्शन मिलता है।

उन्होनें कहा कि पृथ्वी उजड़ गई है, अपवित्र हो गई है और बंजर हो गई है और बाद में लोभ लालच के दंश में इसकी क्षति भी की गई।

उन्होनें 6 मार्च 1980 में दिल्ली विश्व पर्यावरण संरक्षण कार्यनीति में घोषणा की ''भारतीय परंपराओं ने सिखाया है कि जीवन के सभी स्वरूप मानव, पशु और वनस्पति एक दूसरे से अभिन्न रूप से संबद्ध है। यदि किसी की अस्त व्यस्त होनें की स्थिति आ जाती है तो दूसरा भी अपने आप असंतुलित हो जाता है। प्रकृति का शोषण रोका जाए।''[16]

वह विश्व के संसाधनों 'पृथ्वी, अंतरिक्ष, वायु, जल, वृक्ष व पशु जगत को पृथ्वी की आम विरासत मानती थी और मितव्यता से उनका उपयोग करने पर बल देती थी। हम पृथ्वी के प्रचुर संसाधनों का समभाव से उपयोग कर सके। संतुलन न बिगाड़े तथा प्राकृतिक नियमों में दखल न दें।

विश्व ने उस महान महिला की नसीहत न मानी तो परिणामस्वरूप अमेजन, कैलीफोर्निया, हवाई समेत विश्व के जंगलों में आग, अन्य क्षत्रो में भूकंप, तथा बाढ को हम झेल रहे हैं।

हिमालय की रक्षा एवं समुद्री विकास पर बल

उन्होंने देश में पर्यावरण विभाग बनाया तथा हिमालयी क्षेत्र में पशु, पक्षी और जड़ी बूटियों की रक्षा पर बल दिया। हिमालय की चोटियों पर जाने वाले हजारों पर्वतारोहियों से हिमालय की स्वच्छता की अपील की। उन्हें हिमालय से प्रेम था उन्हें 'पर्वतों की बेटी' कहा गया है।

जुलाई 1981 में उन्होनें महासागर विकास विभाग की स्थापना की उन्होंने जैव विविधता को बनाए रखनें तथा समुंद्र को स्वच्छ रखकर समुंद्री जीव जन्तुओं को बचानें पर बल दिया और समुंद्र से खनिज निकालनें के प्रयोग किए। वह दक्षिण गंगोत्री तथा समुंद्र विकास के प्रति जागरूक थी। 9 जून 1983 को यूगोस्लाविया की फेडरल एसेम्बली में हिन्द महासागर में अस्त्र शस्त्रों की भारी उपस्थिति से विश्व का ध्यान आकृष्ट किया।

अंटार्कटिका संधि

इन्दिरा गाँधी के समय बर्फीले महाद्वीप अंटार्कटिका में भारतीय वैज्ञानिको नें भारतीय तिरंगा फहराया तथा दो सफल खोज यात्राओं के बाद वहां स्थायी रूप से मानवयुक्त केन्द्र की स्थापना की जिससे हम अंटार्कटिका पहुंचने वाले देशों के क्लब में शामिल हो गए। अब भारत अंटार्कटिका संधि में शामिल है।[17]

परमाणु संपन्न राष्ट्र का निर्माण

इन्दिरा गाँधी के नेतृत्व में भारत नें अपना पहला शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट 18 मई 1974 में पोखरण में किया जिससे भारत विश्व में परमाणु संपन्न देशों की सूची में शामिल होकर महाशक्ति बना।

अंतरिक्ष उपग्रह आर्य भट्ट

भारत का प्रथम अंतरिक्ष उपग्रह आर्य भट्ट 19 अप्रेल 1975 को सोवियत संघ के कोस्मोड्रोम से छोड़ा गया। इसके द्वारा दूर के गांवों में टेलीकविजन पहुँचानें के लिए अगस्त में उपग्रह निर्देशीय टेलीविजन प्रयोग साइट प्रारंभ की। अगर आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी टी.वी. पर 'मन की बात' करके आम जनता से जुड़े हैं तो वह भी इन्दिरा गाँधी के प्रयास के कारण ही हुआ।

अंतरिक्ष युग में प्रवेश

उन्होनें दूसरे देशों से संचार सुविधाओं में सुधार हेतु देहरादून में फरवरी 1977 में भारत के दूसरे भू उपग्रह संप्रेषण स्टेशन का उद्घाटन किया। 18 जुलाई 1980 को दूसरा उपग्रह ैस्ट.3 को श्रीहरिकोटा से छोड़कर भारत नें अंतरिक्ष युग में प्रवेश कर लिया। उनके प्रयासों से भारत का प्रथम अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा सोवियत संघ के सहयोग से अंतरिक्ष में गया। यह भारतीय इतिहास का स्वर्णिम दिन था।

एवरेस्ट चोटी फतह

उनके नेतृत्व में 23 मई 1984 को भारत की प्रथम महिला बछेन्द्रीपाल ने एवरेस्ट पर्वत की महान चोटी पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया।[18]

नवें एशियाई खेलों का आयोजन

उन्होंने न केवल खेल मंत्रालय बनाया बल्कि नई दिल्ली में 1982 में नवें एशियाई खेलों का आयोजन कर विश्व में भारत को ख्याति दिलाई।

भारत को महाशक्ति बनाना

उन्होनें हरित क्रांति के द्वारा भारत को खाद्यान्न में आत्मनिर्भर तो बनाया। साथ ही अनाज उत्पादन अत्यधिक होनें से खाद्यान्न का निर्यात भी किया। अब भारत अनाज के लिए किसी पर भी निर्भर नहीं था, बल्कि विश्व के गरीब देशों की भूख मिटाने में सक्षम था।

मिसाइलें बनाना

उन्होनें नवीन परिप्रेक्ष्य में विज्ञान और तकनीक की प्रगति देश की सुरक्षा के लिए अनिवार्य माना। उन्होनें डॉ. अब्दुल कलाम से देश के भविष्य की चिंता जाहिर कर अनेक मिसाइलो का निर्माण कराया।

विश्व की प्रथम महिला

उन्होनें लोकतांत्रिक व्यवस्था को आधार बनाया, जन शक्ति से सीधा जुड़ी। वह राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रोत्थान के हित में अपने प्राणों की आहुति देनें वाली विश्व की प्रथम महिला बन गई।

विश्व के शक्तिशाली आका अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन को चेतावनी देकर पाकिस्तान के दो टुकड़े किए तथा बांग्लादेश का निर्माण कर विश्व का भूगोल बदलने वाली प्रथम राजनेता बन गई।

निष्कर्ष

अतः हम कह सकते है कि प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी नें भारत वर्ष को एक समस्याग्रस्त एवं कमजोर राष्ट्र पाया और उसे स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर, गौरवशाली तथा शक्तिशाली देश में बदल दिया। भारत की शक्ति का लोहा विश्व मानने लगा। भारत अब सब कुछ करनें में सक्षम था। उन्होंने भारत की एकता एवं धर्मनिरपेक्षता के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। उनकी उपलब्धियाँ, उनके त्याग एवं बलिदान को भारत कभी नहीं भूल सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सरन रेणु : भारत के प्रधानमंत्री, डायमंड बुक्स, नई दिल्ली, 2015, पेज 61
2. मिलन, डॉ. रमेश गुप्त, शक्तिपुज इन्दिरा गॉधी, देवेन्द्र प्रकाशन, दिल्ली 2011, पृष्ठ 281
3. नकवी, शकीला, प्रधानमंत्रीः शक्ति विश्लेषण तथा भूमिका अभिज्ञान, साहित्यागार जयपुर, 2022 पेज 98
4. सारस्वत, माधवानंद, भारत के प्रधानमंत्री, प्रियंका प्रकाशन, पिलानी 2010, पेज 71
5. चतुर्वेदी, जगदीश प्रसाद– राष्ट्रपति संसद और प्रधानमंत्री,साहित्य संगम इलाहाबाद, 1995 पेज 66
6. सिंह, डॉ. मनवीर, भारत के प्रधानमंत्री, विश्व भारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ 93
7. किदवई, रशीद–भारत के प्रधानमंत्री, सार्थक, नई दिल्ली, 2021 पेज 93
8. मिलन, डॉ. रमेश गुप्त, शक्तिपुंज इन्दिरा गाँधी, देवेन्द्र प्रकाशन, दिल्ली 2011, पृष्ठ 267
9. नकवी, शकीला, प्रधानमंत्रीः शक्ति विश्लेषण तथा भूमिका अभिज्ञान, साहित्यागार जयपुर, 2022 पेज 90
10. चतुर्वेदी, जगदीश प्रसाद– राष्ट्रपति संसद और प्रधानमंत्री,साहित्य संगम इलाहाबाद, 1995 पेज 66
11. मिलन, डॉ. रमेश गुप्त, शक्तिपुंज इन्दिरा गाँधी, देवेन्द्र प्रकाशन, दिल्ली 2011, पृष्ठ 241–246
12. मिलन, डॉ. रमेश गुप्त, शक्तिपुंज इन्दिरा गाँधी, देवेन्द्र प्रकाशन, दिल्ली 2011, पृष्ठ 244
13. मिलन, डॉ. रमेश गुप्त, शक्तिपुंज इन्दिरा गाँधी, देवेन्द्र प्रकाशन, दिल्ली 2011, पृष्ठ 228–236
14. इण्डियन एक्सप्रेस 15 अक्टूबर 1968
15. द टाइम्स ऑफ इण्डिया, 15 जून 1972
16. द हिन्दू, 7 मार्च 1980
17. मिलन, डॉ. रमेश गुप्त, शक्तिपुंज इन्दिरा गाँधी, देवेन्द्र प्रकाशन, दिल्ली 2011, पृष्ठ 278
18. इण्डिया टूडे, जून 1984

❖◆❖